आज के भारतीय समाज में नई जीवन-शक्ति लाने में आदि शंकराचार्य के सिद्धांतों की प्रासंगिकता है

डॉ पूजा गुप्ता

AFFILIATIONS: सहायक प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-११०००७, भारत; ई-मेल: poojagupta@ramjas.du.ac.in

Abstract

गुरु आदि शंकराचार्य भारत के गौरवमयी सांस्कृतिक इतिहास के एक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ हैं। हम उन्हें आध्यात्मिक जीवन के प्रवर्तक के रूप में भी जानते हैं। उन्होनें प्राचीन वैदिक धर्म का अद्वैत के रूप में प्रचार किया। एकभाव की दृष्टि के तत्त्वज्ञान से मानव जाति को अवगत कराया। परन्तु आज का मानव दिशाहीन हो रहा है। भारतीय समाज में व्याप्त अज्ञानता, अधर्म, अविश्वास, असंतोष, भ्रांतियाँ एवं अन्य कुरीतियों को दूर करने के लिए मनुष्य की आन्तरिक एवं आध्यात्मिक चेतना लाना अत्यंत आवश्यक है। उनके अनुसार मानव के सत्कर्म ही उसके जीवन उद्धार का एकमात्र साधन है और इसी से संतुष्टि मिल सकती है। आदि शंकराचार्य के सिद्धान्त समाज में नई जीवन-शक्ति लाने के आधारभूत हैं व हमारा मार्गदर्शन करते हैं।

Keywords: अद्वैत, आध्यात्मिक चेतना, आत्म-ज्ञान, एकत्त्वम, ब्रह्मानन्द, सत्कर्म

Introduction:

['वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः

परस्तात् [१]'

अर्थात् मैंने बादलों के पार रहने वाले तेजस्वी आदित्यवर्ण वाले पुरुष, अर्थात ईश्वर को जान लिया है [२]। ऐसा कहने का अधिकारी केवल वही व्यक्ति हो सकता है जो केवल ईश्वर के होने का दावा ही नहीं करता अपितु उसको अपने शरीर की धमनियों में महसूस भी करता हो। वह

अपने व्यक्तिगत अनुभव से पूरी तरह ईश्वर के अस्तित्व से विश्वस्त हो चुका हो। इस प्रकार का अनुभव ही एक धार्मिक व्यक्ति का लक्ष्य होना चाहिए। इसी आध्यात्मिक जीवन के प्रवर्तक के रूप में हम सभी गुरु आदि शंकराचार्य को जानते हैं।

आज के समाज में मानव अपने जीवन लक्ष्य से भटक रहा है। जीवन रूपी चक्र में वह दिशाहीन हो रहा है। मनुष्य आज बौद्धिक स्तर तक पहुँच चुका है लेकिन उसे इससे भी उच्चतर स्तर तक पहुँचना है। यह आध्यात्मिक पूर्णता का स्तर है। बौद्धिकता से हमें आनंद की चरम सीमा तक पहुँचना है। यह केवल धार्मिक अनुशासन से ही संभव है। धार्मिक अनुशासन से अभिप्राय उस पूर्णता को प्राप्त करना है जो नैतिक अनुशासन के अनुसरण व आध्यात्मिक साधना के अभ्यास से मिलती है। वह व्यक्ति जो अपनी विकृत प्रकृति व अपूर्ण जीवन-शैली से ऊपर उठने का प्रयत्न करता है, वही ऐसे धार्मिक अनुभव की प्राप्ति कर सकता है।

मेरे विचार में धर्म की ऐसी व्याख्या का श्रेय गुरु आदि शंकराचार्य को जाता है जो भारत के सांस्कृतिक इतिहास के अमर स्तंभों में से एक हैं। उन्होंने उपनिषदों और भगवद्गीता आदि के उपदेशों की व्याख्या इस प्रकार से की कि वह हर युग के समयानुकूल सिद्ध हुई [३]। उनकी यह व्याख्या एक नई कृति के रूप में पहचानी गई। मुझे लगता है कि वर्तमान युग के उद्धार के लिए यह बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

आज के भारतीय समाज में व्याप्त अज्ञानता, अधर्म, अविश्वास, असंतोष, भ्रांतियाँ और अन्य कुरीतियों को दूर करना अत्यंत आवश्यक है। स्वयं को जानना, अपना जीवन-लक्ष्य पहचानना, अपना संसार से सम्बन्ध खोजना आदि समाज में नव-चेतना व नई जीवन-शक्ति लाने के माध्यम हैं। आदि शंकराचार्य के सिद्धान्त इन्हीं माध्यमों का आधारभूत हैं। आज के भारतीय समाज में नई जीवन-शक्ति लाने में उनके सिद्धान्तों की प्रासंगिकता को इस शोध-पत्र के द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

Objectives of the paper

- आदि शंकराचार्य के सिद्धांतों की महत्ता को समझना
- आज के समय में उनकी प्रासंगिकता को पहचानना
- मनुष्य की आन्तरिक एवं आध्यात्मिक चेतना का मार्ग ढूँढना

उनके जीवन से प्रेरणा लेना

Methodology

इस शोध-पत्र के लिए आदि शंकराचार्य की कृतियाँ व उनके विभिन्न रूपान्तरणों का अध्ययन किया गया। इस लेख में उनके सिद्धान्तों से प्रेरित अभिव्यक्तियाँ और उल्लेख विशेष रूप से उद्धृत किए गए हैं। उनके विचार, उपदेश व उनकी जीवन शैली पर लिखे गए साहित्य को यथोचित निर्दिष्ट किया गया है।

Results

आदि शंकराचार्य की कृतियों में हमें महान प्रतिभा, तार्किक सूक्ष्मता और भावों की गंभीरता के दर्शन होते हैं। कलादि नामक एक छोटे-से गाँव में एक विद्वान ब्राह्मण के यहाँ जन्मे आदि शंकराचार्य असाधारण व्यक्तित्व के स्वामी थे। बचपन से ही तप व योग के प्रति उन्हें लगाव था व वे अपना सम्पूर्ण जीवन अपने ज्ञान के प्रकाश से दूसरों के जीवन को प्रकाशित करने में लगा देना चाहते थे। समाज के उद्धार हेतु उन्होनें अपनी माता को मना लिया व सन्यास ले लिया। गुरु गोविन्दा भगवत्पदा के अनुयायी बन उन्होनें अथाह ज्ञान प्राप्त कर चारों ओर फैलाया।

अपने सुवचनों से उन्होनें अपने समय के अनेक महान विद्वानों को प्रभावित किया। उन्होनें कहा कि वेदों की मौलिक शिक्षा के अनुरूप ईश्वर एक ही है और वेदों का अध्ययन ही मोक्ष-प्राप्ति का एकमात्र साधन है। यही जीवन की आधारभूत चेतना है। वह एक ऐसे व्यक्ति थे जिनमें मानव जीवन के सभी पक्ष दिखाई पड़ते थे। ऋग्वेद में लिखा है –

''तद्विष्णोः परमं पदं सदा

पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम् [४]'

अर्थात् जिस प्रकार शुद्ध नेत्र आकाश में रंगों को बंनता-बिखरता देखते हैं, उसी प्रकार आत्मा के निर्मल नैन विष्णु के परमधाम को देखते हैं। भगवद्गीता में भी इसका संदर्भ मिलता है – 'ब्रहमसंस्पर्श [५]' अर्थात् ब्रह्म का स्पर्श। शंकराचार्य के विचार में भी 'अनुभवावसातमेव विद्याफलम् [६]' अर्थात् विद्या का फल अनुभव की प्राप्ति से ही मिलता है। जब हमें एक बार अनुभव हो जाता है तो हम उसे अपने शब्दों में, तार्किक प्रस्तावनाओं में अभिव्यक्त करने की कोशिश करते हैं, लेकिन हमारे ऋषियों का कहना है - 'यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह [७]', यानि इसे अपने शब्दों से या तार्किक प्रस्तावनाओं से पूरी तरह अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। शब्द अकेले इसे अभिव्यक्त करने में समर्थ नहीं हैं। तभी तो कहा गया है कि जो सत्य अक्षरों से अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता उसकी कोई सूक्तियाँ नहीं हैं, कोई उपदेश नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को उसे अपने में ही ढूँढना चाहिए। शंकराचार्य के अनुसार मनुष्य अकेला ही साधक है और जब वह अपनी साधने से ईश्वर

को प्राप्त कर लेता है तो वह भिन्न आकार की तेजस्वी आत्मा हो जाता है [८]। इसलिए कहा गया है कि ईश्वरत्व के इस रहस्य को शब्दों में अभिव्यक्त करना सरल नहीं है। यही शंकराचार्य के गीता-भाष्य का सार है। यही यथार्थ है, मनुष्य जीवन की उन्नति और समाज के उद्धार का सार्थक मार्ग है।

उपलब्ध साहिय के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि आदि शंकराचार्य ने ऐसे समय में भारत भूमि पर जन्म लिया जब बौद्ध धर्म व हिन्दू धर्म, दोनों ही विभिन्न धार्मिक संप्रदायों व मतों में खंडित हो रहे थे, लोगों में धर्म के प्रति आस्था क्षय हो रही थी। तंत्र-मंत्र, भौतिक रहस्यवाद जैसी कुरीतियों के कारण बौद्ध धर्म, अंधविश्वास और अनेक अनावश्यक धार्मिक पद्धतियों के कारण हिन्दू धर्म – दोनों ही पतित हो रहे थे। वे आदि शंकराचार्य ही थे जिन्होंने हिन्दू धर्म का फिर से निर्धारण किया और तर्कसंगत बौद्ध उपदेशों का हिन्दू धर्म में समन्वय करने का श्रेय उन्हें ही जाता है। उन्होंने बुद्ध को भगवान के अवतार के रूप में पहचाना था [९]।

शंकराचार्य ने ऐसे कठिन समय में प्राचीन वैदिक धर्म का अद्वैत के रूप में प्रचार किया [१०]। उन्होंने एकभाव की दृष्टि के ज्ञान से मानवजाति को अवगत कराया। इस प्रकार वे हिन्दू विचारों व जीवन शैली का पुनरुत्थान करने में सफल हुए। वास्तव में, मौलिक वैदिक धर्म के पुनर्जीवन, जिसे हम बौद्धिक हिन्दुत्व कह सकते हैं, आज भी आदि शंकराचार्य के प्रयत्नों के कारण ही जीवंत है। आज के निर्जीव समाज में नई-चेतना लाने में उनके सिद्धान्तों की अत्यन्त महत्ता है।

उन्होनें हिन्दुत्व की परिभाषा को परिवर्तित नहीं किया बल्कि उसका विस्तृत दृष्टांत प्रस्तुत किया [११]। उन्होनें हिन्दू धर्म के मूलग्रंथों जैसे ब्रह्मसूत्र, श्रीमद्भगवद्गीता, उपनिषदों का विद्वतापूर्ण प्रतिपादन, शिक्षा केंद्रों की स्थापना जैसे अनेक ऐसे कार्य किए जो आत्म-ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रेरित करते हैं। आजीवन आदि शंकराचार्य ने आत्म-ज्ञान की प्राप्ति के लिए शिक्षा दी। यह आत्म-ज्ञान अद्वैत-दर्शन ही है। यहाँ हम युग्मता से परे एकभाव की दृष्टि रखते हैं। अपनी प्रसिद्ध कृति 'भज गोविन्दम्' में, आदि शंकराचार्य ने भक्ति के मार्ग के महत्त्व को बताते हुए कहा है कि सिर्फ भक्ति का मार्ग ही तुम्हें जीवन और मरण के चक्रव्यूह से मुक्ति दिला सकते हैं।

शंकराचार्य ने अपने भाष्य में मुक्ति के इच्छुक व्यक्तियों की जिज्ञासाओं को शान्त करते हुए कहा है कि "जिसमें भी मनुष्य का अंश है, वह ज्ञान और मुक्ति का अधिकारी है।" फिर

इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि वह किस धर्म, जाति या समुदाय का है। उनका यह वाक्य हमें आज भी प्रेरणा देता है। आज वे मानव जो अचेत व अज्ञानी हैं, यदि इसे अपने जीवन में अपना लें तो वे भी ज्ञान और मुक्ति के अधिकारी बन सकते हैं।

जीवन चक्रव्यूह व ज्ञान-प्राप्ति, मुक्ति आदि की दुविधा में फँसे लोगों को आदि शंकराचार्य के ये शब्द राहत पहुँचाते हैं – 'मोक्षायते संसार:' अर्थात् इस संसार का मुख्य उदेश्य है मोक्ष प्राप्त करना। हमारा इस संसार में जन्म, ज्ञान के स्तर तक पहुँचने के लिए ही हुआ है। 'ब्रह्म सत्यम्, जगत मिथ्या [१२]' अर्थात् ब्रह्म् ही सत्य है, संसार मिथ्या है। आदि शंकराचार्य का ये सूत्र हमारा ध्यान इस ओर केंद्रित करता है कि यह संसार एक भ्रम है, धोखा है क्योंकि वह तो निरन्तर आता-जाता रहता है, शाश्वत तो कुछ भी नहीं। साथ ही, यह ब्रह्मांड भी ईश्वर द्वारा ही रचाया हुआ है। 'सर्व विष्णु मयं जगत्' अर्थात् यह सांसारिक जीवन ईश्वर की ही रचना होने के कारण उसी का अभिन्न अंग है। इसीलिए ईश्वर ही एकमात्र सत्य है।

आदि शंकराचार्य की कृतियाँ हिन्दू धर्म के मूलभूत उपदेशों का यथार्थ प्रस्तुत करती हैं जिसे एक साधारण व्यक्ति भी आसानी से समझ सकता है। उनके द्वारा कृत वेदान्त व्याख्या एक धार्मिक धरोहर के रूप में है जिसे धर्म सिद्धान्तों के सभी प्रचारकों जैसे स्वामी विवेकानन्द व अरविन्द घोष का भी सम्मान प्राप्त हुआ है। उसके अनुसार धर्म रूढ़िगत विश्वासों की मान्यता तक ही सीमित नहीं है, यह केवल आचार विषयक धर्मनिष्ठा का प्रश्न भी नहीं है। यह मात्र शास्त्रोक्त विधियों का अनुष्ठान भी नहीं है। यह हमारे अपने-आप का पुनर्निर्माण है, हमारी प्रकृति की काया-पलट है।

जब तक एक विशेष प्रकार का अनुभव हमें प्राप्त नहीं होता, हम प्रामाणिक रूप से धार्मिक व्यक्ति नहीं बन सकते। धार्मिक होने से तात्पर्य, 'अभय' व 'अहिंसक' होने से है। आज, हम में से बहुत-से लोग स्वयं को धार्मिक कहते हैं और कुछ ऐसी चीजों को अपना लेते हैं जो धर्म के बाहरी रूप में होती है लेकिन वह अंदरूनी परिवर्तन जो हमें सच्चे धार्मिक व्यक्ति के रूप में स्वीकृति प्रदान करता है, हम में से बहुत कम में होता है। अपने जीवन में नव-चेतना लाने हेतु हमें धर्म को एक ऐसे माध्यम के रूप में मानना होगा जिससे हम आत्मा के संसार में प्रवेश कर सकें।

आदि शंकराचार्य ने कहा है कि वेदों के मौलिक सिद्धान्तों के अनुसार ईश्वर एक है और वेदों का अध्ययन उसे उस तक पहुँचने का मार्ग

दिखाता है। यदि हम उनके सिद्धान्तों का अपने जीवन में अनुसरण कर लें तो हम अपने अंतर्द्वंद पर काफी सीमा तक नियंत्रण पा सकते हैं।

'एकमेव अद्वितीयम् ब्रह्म [१३]'

अर्थात् 'सम्पूर्ण' एक अकेला होता है, न कि दो। अन्य शब्दों में कोई दूसरा नहीं होता, बल्कि वह एक विशाल विविधता का रूप होता है। आदि शंकराचार्य के अनुसार 'एकत्वम' अर्थात् एकता ही सारे ज्ञान का तत्त्व है। यही अद्वैत का सिद्धान्त है। जिस तरह गन्ने के कई बाँस हो सकते हैं परन्तु सभी के रस में समान मिठास होती है, उसी तरह जीव अनेक होते हैं, परन्तु उन सब में साँस तो एक ही होती है। राष्ट्र अनेक हो सकते हैं, परन्तु धरती माता तो एक ही है। इसी प्रकार, आदि शंकराचार्य ने अनेकता में एकता का अमूल्य सिद्धान्त दिया जो आज के विश्व के लिए एक महत्त्वपूर्ण संदेश है। बहुत लोग मानते हैं कि भारत जो विविधता में भी एक परम राष्ट्र के रूप में खड़ा है, शायद इसी सिद्धान्त के कुछ आंशिक अनुसरण के कारण ही टिका हुआ है। परन्तु इससे जरा-सा भी भटकने पर भारतीय समाज की दयनीय दशा का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

शंकराचार्य के विचार में शरीर विविध हो सकता है परन्तु इन सभी में ईश्वर एक ही है। अद्वैत के अनुसार इसे केवल एक भाव की तरह ही अनुभव करना सम्भव है, न कि इसे 'क्रिया अद्वैत' के रूप में लेना। सिंह, सर्प और मानव में एक ही ईश्वर है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मानव को सिंह के साथ रहना चाहिए या सर्प को अपने ऊपर लपेट लेना चाहिए। प्रत्येक जीव की अपनी एक अलग पहचान है और उससे उसी प्रकार व्यवहार करना चाहिए। यह तो केवल एक भाव है जो हमें यह विश्वास दिलाए कि सभी जीव-जन्तुओं में एक ही ईश्वर है। यह जीव प्राणियों में मूलरूप से तीन ईश्वरीय विशिष्टताओं से प्रमाणित होता है – अस्ति अर्थात् अस्तित्व, भाति अर्थात् पहचान व प्रियम् अर्थात् उपयोगिता।

'सत्-चित्-आनन्द [१४]' भी इसी तथ्य को वर्णित करते हैं। सत् यानि जिसमें कोई बदलाव न आए, चित् यानि सम्पूर्ण प्राकृतिक जागरूकता और जब सत् एवं चित् मिल जाएँ तो सम्पूर्ण आनंद की प्राप्ति होती है। यह आनंद स्थिर है। इसे ब्रह्मानन्दम् कहा गया है। सत् और चित् का मिलकर आनंद देना एक चीनी और जल के मिश्रण के समान है जो मिठास के साथ-साथ पिपासा भी शान्त करता है। यदि हम इस तथ्य के मूलभूत आधार को समझ लें और अपने जीवन में धारण कर लें तो निश्चय ही ब्रह्मानन्द को प्राप्त कर लेंगे।

भक्ति, योग व कर्म – शंकराचार्य के

अनुसार ये तीन साधन हैं जो मानव को बौद्धिक प्रकाश व हृदय-शुद्धि प्रदान कर सकते हैं। अपनी ३२ वर्ष की लघु आयु में ही उन्होंने विभिन्न पूजा-अर्चना की विधियों का शुद्ध व संघटित रूप एकत्र कर एक दर्शन-शस्त्र के रूप में बाँध दिया जो हमें अद्वैत के रूप में प्राप्त हुई। वे जानते थे कि अद्वैत के लिए घोर साधना की आवश्यकता होती है जो सारे अभिमान को मानव-बुद्धि से समाप्त करने में सक्षम है। इसीलिए उन्होंने भक्ति, योग व कर्म के महत्त्व पर बल दिया। उन्होंने सत्संगति को साधन की पहली सीढ़ी बताया क्योंकि अच्छे लोगों की संगति से ही मौलिकता एवं एकाग्रता से प्रेम हो सकता है। यही हमें मोह से मुक्ति देगा। यही मोक्ष का मार्ग है। ऐसी धार्मिक चेतना से ही चित् को प्रकाश प्राप्त हो सकता है। 'मोक्षायते संसारः [१५]' अर्थात् इस संसार का उदेश्य है मोक्ष प्राप्त करना।

आदि शंकराचार्य के सिद्धान्तों के अनुसार वह व्यक्ति जिसने स्वयं के चित्, विचारों और इच्छाओं पर विजय पा ली, वही असली विजेता है। मन की इच्छाओं को बढ़ाना तृष्णा है। यह पिपासा एक बेड़ी की तरह है जो प्रतिदिन बढ़ती ही जाती है। इसीलिए शंकराचार्य ने कहा है कि भौतिक साधनों और सांसारिक सुखों को प्राप्त करने की उत्कृष्ट इच्छा मानव की उन्नति में अवरोधक है। अधिक-से-अधिक धन प्राप्त करने की होड़ में लगने से नहीं अपितु मन की इन्हीं इच्छाओं का त्याग करने से ही आनंद प्राप्ति हो सकती है। मानव का वास्तविक धन तो उसके सत्कर्म हैं। उसके जीवन उद्धार का यही एकमात्र साधन है और इसी से संतुष्टि मिल सकती है। समाज में नई जीवन-शक्ति लाने का यही तात्पर्य है।

आदि शंकराचार्य ने आजीवन मानव हृदय में यह विश्वास जागृत करने के लिए प्रयास किया कि वह अंतहीन सर्वशक्तिमान है [१६]। उन्होनें दुराचारी आभासों को दूर कर अपनी वास्तविकता पहचानने के लिए मानव को प्रेरित किया। ऐसा करने से वह एक ऐसे धरातल पर पहुँच सकता है जहाँ वह अभिमान, अहम्, निराशा अथवा विषाद – सभी से मुक्त हो सके; ताकि वह निन्दा की अग्नि अथवा प्रचुर प्रशंसा की वर्षा से अप्रभावित रह सके। तभी वह स्वयं को पहचान सकेगा। इस आत्म-बोध के लिए ज्ञान-पथ पर चलना ही सर्वोच्च साधन है। अपनी कृति 'आनन्द लहरी [१७]' में उन्होनें मानव का चरम लक्ष्य आनन्द-प्राप्ति व उसे प्राप्त करने का साधन ईश्वरीय कृपा बताया है।

आज के समय में जब कहीं विभिन्न धार्मिक विचारों की बहस छिड़ी है तो कहीं तानाशाही चल रही है, ऐसे में धर्म-स्थापना का

मार्ग है – धर्म-सिद्धान्तों का अनुसरण। हमें उन्हें अपने तर्कों, विश्वास व सद् उपदेशों से जीतना होगा; नम्रता से लेकिन पूरे विश्वास से अपना तथ्य प्रस्तुत करना होगा। प्रस्तुत शोध से यह स्थापित होता है कि केवल बोध से ही आज के युग में धर्म को बचाया जा सकता है।

अपने समय में शंकराचार्य ने देखा कि लोग शिव, शक्ति, विष्णु आदि अनेक देवताओं की पूजा करते हैं। उन्होंने इन सभी देवताओं को विधिसम्मत और ब्रह्म के वैध रूपों में देखा और हमें इन नामों और दूसरी चीजों को लेकर झगड़ा न करने की सलाह दी। उन्हें 'षणमतस्थापनाचार्य' के रूप में माना गया। तब उन्होनें दूसरे धर्मों में भी समन्वय की भावना का समर्थन किया जिसकी हमें अपने भारतीय समाज में आज अत्यंत आवश्यकता है।

वे लोकतंत्र में विश्वास करते थे और लोकतांत्रिक व्यक्ति के रूप में ही समन्वय और एकता का प्रचार करते थे। यदि हम लोकतंत्र को सही अर्थ में ग्रहण करें तो लोकतंत्र नाम है – विभिन्नताओं को स्वीकार करने का, संसार की विविधता की स्वीकृति का, उन्हें प्रोत्साहित करने का न कि उन्हें नष्ट करने या मिटाने का। आज के मतभेदों को हमें शांतिपूर्ण तरीकों से दूर करना होगा। हिंसा लोकतंत्र की भावना के विरुद्ध है। शंकराचार्य द्वारा दी गई यह लोकतंत्र की भावना हमसे यह अपेक्षा करती है कि हम प्रत्येक व्यक्ति को अपनाएँ, उसे ब्रह्म का एक अंश समझें और कभी भी अन्तिम सत्य पर अपना एकाधिकार न समझें। लोकतंत्र के इसी स्वरूप की आज हमारे देश में भी स्वीकार करने की जरूरत है। सार्थक अर्थों में लोकतंत्र में आस्था रखने वाले व्यक्तियों को किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार को, भाई-भतीजावाद को, जातीय पूर्वाग्रहों और दंगे-फसाद को बढ़ावा नहीं देना चाहिए।

Conclusion

इस शोध-पत्र का उदेश्य यह संदेश देना है कि हम आत्म-मूल्यांकन करें और अपना लक्ष्य निर्धारित करें। हमें प्राचीन ऋषियों के आदेशों पर ध्यान देना चाहिए और उनके सिद्धान्तों का अनुसरण करना चाहिए। तभी हमारे जीवन को नई शक्ति व प्रगति दिशा प्राप्त होगी।

ACKNOWLEDGEMENTS

मैं प्राचार्य, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत को निरंतर सहयोग के लिए धन्यवाद देना चाहती हूँ।

References/संदर्भ

१ श्वेताश्वतर उपनिषद्; तृतीयोऽध्यायः; श्लोक-८

२ Swami Paramananda, The

Upanishads, Prakash Books India Pvt. Ltd, 2019

३ Kinkhabwala, Bhavesh. A Research Study on Jagadguru Adi Shankaracharya with Specific Reference to the Principles and Practices of Management and Relevance in Modern Times with Lessons to be Learnt for Managers/ CEOs. Purushartha 2016; 9(2):27-34

४ ऋग्वेद - मण्डल 1; सूक्त 22; मन्त्र 20

५ श्रीमद्भागवतं अध्याय 6 – ध्यानयोग; श्लोक 6.28

६ ब्रह्मसूत्रभाष्यम्; तृतीयोऽध्यायः; चतुर्थः पादः

७ तैत्तिरीयोपनिषद् ब्रह्मानन्दवल्ली; नवमोऽनुवाक; श्लोक-१

८ कुमार आदित्य, 'शंकराचार्य के शास्त्रार्थ', व्हाइट फॉल्कन पब्लिशिंग, २०१८

९ उपाध्याय डीनदायल, 'जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य', प्रभात प्रकाशन, २०१७

१० श्रीवास्तव कमाल शंकर, 'आदि शंकराचार्य ऐवम् अद्वैत', प्रभात प्रकाशन, २०१८

११ वर्मा पवन कुमार, 'आदि शंकराचार्य: हिन्दू धर्म के महान विचारक', वेस्टलैंड, २०१८

१२ https://sanskrit4u.com/ब्रह्मज्ञानावलीमाला

१३ श्री अरविन्दोपनिषद्; श्लोक-१

१४ http://literature.awgp.org/akhandjyoti/1996/May/v2.21

१५ Anubhavananda Swami, 'Atmabodhah of Adi Shankaracharya', Indra Publishing House, 2016

१६ मिश्र जयराम, आदि शंकराचार्य जीवन और दर्शन, लोकभारती प्रकाशन, २००८

१७ https://hi.wikipedia.org/wiki/सौन्दर्यलहरी